11 / 07 / 74 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

मुरली में दी गई डायरेक्शन्स से

सर्व-कमियों से छुटकारा पाने का अनुभव

➢➢ मुरली धारण कर सर्व-कमियों से छुटकारा पाना..

➳ _ ➳ "मुरली अमृत की धारा है धारा जो देती दुखों से किनारा..." सेण्टर में ये गीत सुनते हुए मैं आत्मा मुरलीधर बाबा का आह्वान करती हूँ...

→ मीठे बाबा मीठी-मीठी मुरली सुना रहे हैं...

■ और मैं आत्मा गॉडली स्टूडेंट बन ध्यान से मुरली सुन रही हूँ...

▶ और साथ-साथ धारण करते जा रही हूँ... और अपनी चेकिंग करते जा रही हूँ...

➳ _ ➳ बापदादा तीन तख्तों के अधिकारी बनने के बारे में बता रहे हैं...

→ 1. 'साक्षीपन' का तख्त

■ मैं आत्मा चेक करती हूँ की क्या मैं इस तख़्त की अधिकारी बनी हूँ...?

■ हर कदम, हर संकल्प में बापदादा को सदा साथी अनुभव करती हूँ या देहधारियों का सहारा लेती हूँ...?

▶ मैं आत्मा बाबा के साथ साथीपन का अनुभव बढ़ा रही हूँ और अचल, अडोल बनते जा रही हूँ...

▶ हर कर्म में बाबा को साथ रखती हूँ और सफलता पा रही हूँ...

→ 2. बाप का 'दिल रूपी' तख्त

■ मैं आत्मा चेक करती हूँ की क्या मैं आत्मा बाबा के दिल तख़्तनशीन बनी हूँ...?

▶ दिल तख़्तनशीन बनने के लिए मैं आत्मा बाबा को मनसा, वाचा, कर्मणा व तन-मन-धन सब बातों में फॉलो कर रही हूँ...

▶ सबकुछ बाबा का ही है... बाबा को ही अर्पित करती हूँ...

→ 3. भविष्य विश्व 'महाराजन्' का तख्त

■ क्या मैं विश्व के राज्य के तख्तनशीन बनने की अधिकारी हूँ...?

■ विश्व महाराजन बनने के लिए मुझे पहले कर्मेन्द्रियजीत, प्रकृतिजीत बनना होगा...

▶ मैं आत्मा प्रकृतिजीत, मायाजीत बनने का पुरुषार्थ कर रही हूँ और जगतजीत बन रही हूँ...

▶ मैं आत्मा राजा हूँ और इस शरीर को चला रही हूँ इस स्मृति को पक्का कर रही हूँ...

➳ _ ➳ बापदादा हरेक क्यू से मुक्त होने की विधि सुना रहे हैं... मैं आत्मा सुनते-सुनते धारण करते जा रही हूँ...

→ भिन्न-भिन्न प्रकार की अर्ज़ी समाप्त करने बाबा ने जो सर्वशक्तियाँ दी हैं उनको समय प्रमाण यूज कर रही हूँ...

→ मास्टर नॉलेजफुल बन भिन्न-भिन्न प्रकार के उल्हनों की क्यू को समाप्त कर रही हूँ...

→ त्रिकालदर्शी बन ड्रामा के पाठ को पक्का कर रही हूँ...

→ समर्थ संकल्पों से भिन्न-भिन्न प्रकार की कम्पलेन्ट्स की क्यू को समाप्त कर रही हूँ...

➳ _ ➳ बापदादा वृत्ति और दृष्टि की चंचलता को समाप्त करने के लिए स्मृति स्वरुप बनने की समझानी दे रहे हैं...

→ मैं आत्मा सबके मस्तक में मणि को ही देख रही हूँ...

→ देह रूपी सांप को नहीं देख रही हूँ...

→ आत्मा भाई-भाई की स्मृति में ही रहती हूँ...

→ सर्व संबंधों का रस एक बाप से कर रही हूँ जिससे देहधारियों की तरफ बुद्धि ना जाये...

→ दृष्टि, वृत्ति चंचल होते ही बाबा को धर्मराज के रूप में याद करती हूँ... और गलती नहीं करती हूँ...

→ मैं आत्मा एक बाबा के लगन में ही मगन हो रही हूँ...

➳ _ ➳ फिर बापदादा मास्टर नॉलेजफुल भव, मास्टर सर्वशक्तिमान् भव् का वरदान देते हैं...

→ मैं आत्मा मास्टर नालेजफुल बन अमृतवेले अपनी दिनचर्या को सेट कर रही हूँ...

→ व्यर्थ संकल्पों से मुक्त होने सदा ज्ञान रत्नों से खेल रही हूँ...

→ सदा ज्ञान के सिमरण में ही बुद्धि को बिजी कर रही हूँ...

→ मास्टर सर्व शक्तिवान की सीट पर सेट रहकर माया के आकर्षणों से मुक्त हो रही हूँ...

→ अपने जन्म-जन्मान्तर के विकर्मों से मुक्त हो रही हूँ...

→ मैं आत्मा सदा स्वयं के और विश्व के कल्याण की जिम्मेवारी का ताज पहने रहती हूँ...

→ मैं आत्मा सर्व शक्तियों की चाबी से सबकी बुद्धि का ताला खोल रही हूँ...

■ मैं आत्मा मुरली के हर डायरेक्शन का पालन कर अपनी सभी कमियों को समाप्त कर रही हूँ...

▶ और हर कर्म में विजय प्राप्त कर रही हूँ...